प्रथम अध्याय

भगवतीचरण वर्मा - व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

प्रस्तावना --

१) जीवन वृत्त --

अ) जन्म-माता-पिता-बचपन
ब) शिक्षा
क) विवाह
ड) जीविका

२) व्यक्तित्व --

अ) वकील
ब) पत्रकार
क) कवि
ड) उपन्यासकार
इ) कहानीकार

३) कृतित्व --

अ) काव्य
ब) कहानी
क) नाटक
ड) निबंध
इ) विश्लेषण
ई) उपन्यास

४) निष्कर्ष ---

भगवतीचरण वर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना --

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी साहित्य में जिन रचनाकारों ने अपने साहित्य से हिन्दी भाषा और साहित्य को अपने योगदान से विकसित किया एवं समृध्द किया है, ऐसे रचनाकारों में भगवतीचरण वर्मा भी एक हैं । कथा, कविता, उपन्यास, संस्मरण, नाटक, निबंध आदि विधाओं में साहित्य की रचना कर उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है ।

उपन्यास आधुनिक युग की देन है । अंग्रेजी शिक्षा और साहित्य से पहले परिचित होने के कारण 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग बंगाल में लगभग १९वीं शताब्दी के छटे दशक में निश्चित हो गया था । तत्पश्चात बंगभाषा के श्रेष्ठ उपन्यासों के अनुवादों के क्रम में तथा पुनर्जागरण कालीन चेतना से सम्पृक्त होने के कारण हिन्दी के क्षितिज पर भारतेन्दु के क्रियाशील होने में भी इसका प्रचलन हुआ । इस रूप में हिन्दी का 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी के '   ' पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है । किन्तु कुछ समालोचक विद्वान इस सत्य को झुठलाकर अपने पुरातनवादी आग्रह के कारण हिन्दी उपन्यास के प्राचीन भारतीय कथा साहित्य की परम्परा का क्रमिक विकास मानते हैं, जो सर्वथा अनुचित है । क्योंकि अधिकांश प्राचीन कथा साहित्य की परम्परा का क्रमिक विकास मानते हैं, जो सर्वथा अनुचित है । क्योंकि अधिकांश प्राचीन कथा साहित्य पद्यबध्द कुतूहलदायक, अलौकिक घटनाओं से पूर्ण प्रेमपूलक तथा उपदेश वृत्ति की भंगिमा परिव्याप्त है । जब कि आधुनिक हिन्दी उपन्यास गद्य में लिखित, वैयक्तिक दृष्टिकोण, विश्वसनीयता, स्वाभाविकता तथा यथार्थ परक स्थितियों पर बल देता है जो निश्चित रूप से पश्चिमी शिक्षा के संपर्क का परिणाम है ।

प्रत्येक साहित्यिक अपनी साहित्यिक परम्पराओं की उपज होता है । प्रतिभाशाली कलाकार परम्परा को आत्मसात करता हुआ उसमें अपना योगदान भी देता है । वर्माजी ने भारतीय साहित्य की अक्षुण्ण धारा को आत्मसात करते हुए अपने जीवनानुभव की कसौटी पर कसकर अपनी मान्यताओं के रूप में ग्रहण किया है । इस दिशा में वे शास्त्रीय और दर्शन दोनों को अधिक महत्व नहीं देते हैं । उनका विचार है " शास्त्रीय ज्ञान की पुस्तकें पढने में मेरा मन नहीं लगता । देरतक सोचने-विचारने में मुझे उलझन सी लगने लगती है । अध्ययन एवं चिंतन और मनन से मैं बहुत दूर रहा हूँ । मैं तो केवल अनुभवों पर स्थित हूँ । "[१] वर्माजी का यह जीवनानुभव उनकी समस्त औपन्यासिक कृतियों पर छाया हुआ है ।

" यह एक विचित विरोधाभास की स्थिति है कि हम भगवती बाबू को मूलत: उपन्यासकार माने या कवि या कहानीकार । यह वर्माजी की सफलता है कि उन्होंने लोगों को भ्रम में रखा है ।[२] " लखनऊ में भगवती बाबू की षाष्ठी पूर्ति के अवसर पर वे शद्ध श्री ठाकुरप्रसाद सिंह ने कहे थे । वस्तुत: बहुमुखी प्रतिभा के धनी भगवती बाबू का व्यक्तित्व कुछ ऐसा आकर्षक है कि जो उनके परिचित हैं वे अत्यंत मधुर मालूम होते थे ।

ऐसे महान साहित्यकार के उपन्यास " चित्रलेखा " का सही अध्ययन करने के लिए उनकी जीवनी एवं व्यक्तित्व और कृतित्व को जान लेना आवश्यक है । कहा जाता है कि, किसी भी साहित्यकार के सही मूल्यांकन के लिए उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना आवश्यक नहीं बल्कि अनिवार्य भी है ।

१ जीवन वृत --

अ) जन्म - माता - पिता - बचपन --

भगवती बाबू का जन्म ३० अगस्त १९०३, भाद्र शुक्ल अष्टमी रविवार के दिन उत्तर प्रदेश के अन्नाव जिले के शफीपुर गाँव में संपन्न कायस्थ परिवार में

हुआ । उनके पिता का नाम भी देवीचरण श्रीवास्तव था । उनके पितामह दो-तीन गाँवों के जमींदार थे । उनकी दो पत्नियाँ थी । जबकि उनकी संतानों के बीच उनकी जायदाद का बंटवारा हुआ तो उनके हाथ वैभव की अंतीम चमक ही रह पायी । परिणामत: आजीविका के लिए उन्हें कुछ करना पडा । भगवती बाबू के पिताजी ने वकालत पास करने के बाद आजीविका की खोज में उन्नाव जिले के शफीपुर तहसील में जाकर बस गए । लेकिन थोडे ही दिन बाद शफीपुर छोडकर वे कानपुर सपरिवार चले गए । क्योंकि शफीपुर जैसे छोटे कस्बे में अच्छी शिक्षा मिलना असंभव था ।

कानपुर के पटकापुर मोहल्ले में कान्यकुब्ज बाह्मणों के बीच भगवती बाबू का बचपन बीतने लगा । मोहल्ले के अखाडो में भगवती बाबू की कनौजिया हेकडी तथा हुडदंग प्रसंद प्रवृत्ति की संतुष्टि होती रही । वे खेल-कूद में प्रवीण थे और उनका गला भी सूरीला था । स्वयं उन्होंने लिखा है -- " बचपन में मुझे संगीत का शौक था, मेरा कण्ठ सुरीला था ... अपने मोहल्ले की रामलीला में मैं सस्वर, रामायण पाठ करता था[3]। " १९०८ में कानपुर में प्लेग का भयंकर प्रकोप था और इसी में भगवती बाबू के पिता का देहान्त हो गया । पिताजी के स्वर्गवास के बाद वे अपने परिवार के साथ कानपुर में ही ताऊ के यहाँ रहने लगे । उनके ताऊ ने भगवती बाबू के पिता का गाँव बेचकर उससे मिले रुपयों को बैन्क में जमा कर दिया । इन रुपयों के बदले में जो ब्याज मिलता था वही उनके परिवार के भरण-पोषाण का एकमात्र साधन बन गया था ।

भगवती बाबू का जीवन एक मध्यमवर्गीय बौद्धिक परिवार में बीता । पिताजी के देहान्त के बाद पूरे परिवार की जिम्मेदार माँ पर ही निर्भर थी । वर्माजी के माताजी ने अपना टूटता हुआ परिवार बचा लिया । परिस्थिति के कुचक्र ने भौंरा-गिल्ली खेलने की ही उम्र में शिशु भगवतीचरण के कोमल हाथों में अनाज-गल्ला, मिर्च-मसाला का थैला पकडा दिया । माँ का भगवती बाबू के ऊपर का शासन हट गया था । इसीलिए कला की प्रवृत्ति भगवती बाबू तेरह चौदह

वर्षा की अवस्था में ही प्रस्फुटित हो गयी थी । अपनी उन्नति और विकास के लिए वे अपनी माँ को सम्मान देते थे । उनका कहना है, कि " यद्यपि मेरी पाँच वर्षा की अवस्था में ही मेरे पिता का देहान्त हो गया था और मेरी उन्नति एवं विकास के प्रति सिवा मेरी माँता के और किसी दूसरे में दिलचस्पी न थी । " 8

ब) शिक्षा --

भगवती बाबू के बचपन के बारे में जानते हुए यह मालूम होता है कि उन्हें अपनी अध्ययन यात्रा में राह में आयी हुयी कठिण समस्याओं का सामना करना पडा । पिताजी के स्वर्गवास के पश्चात उनपर किसी का अधिकार या शासन तो नहीं था । वे आजाद पंछी की तरह बन गये थे । फिर भी उन्होंने अपने आपको बहकने नहीं दिया । इसका कारण जाति और कुल के संस्कार तथा नैतिक मान्यताएँ आदि बातों को माना जा सकता है ।

बचपन से ही वर्माजी की बुध्दि तीव्र और प्रतिभासंपन्न थी । इसी कारण उन्होंने एक ही साल में चौथी और पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण की । किन्तु वे एकाग्र होकर पढ न पाते थे । क्योंकि अपने ताऊजी के भाग के प्रबन्ध के अतिरिक्त उनको और भी बहुत-से घरेलू कार्य करने पडते थे । आर्थिक संकट बराबर बना रहा । जिसके कारण आवश्यक ऐसी कापी किताब खरीदने के लिए पैसे न मिलते थे । सभी कार्यों में व्यस्त रहने के कारण पढाई के लिए समय नहीं मिलता था । इसीलिए एक दिन पाठ याद न करने के कारण छोटीसी गलती के लिए उनकी कसकर पिटाई हुयी थी और एक दर्जे निचे उतार दिया गया । इस अपमान से उनके किशोर हृदय का अहं कुछ संभला और वे पाचवी तथा छठी कक्षा में क्रमश: प्रथम और द्वितिय आये । गरीबी के कारण पाठ्यक्रम के पुस्तकों से वंचित रहे । किन्तु इतना होने पर भी वे नियमित रुप से स्कूल जाया करते थे । साथी उनका उपहास करते, कक्षा अध्यापक उन्हें डाँटते, किन्तु वे अपने भाग्य का विधान समझकर चुप रह जाते थे ।

अपने पैरों में जूते न होते वे अपने आपको कभी हीन न समझाते । अकारण मिलनेवाली किसी भी आर्थिक साहयता को वे ठुकरा देते । अनेक मुसिबतों का सामना करते हुए सन १९२१ में उन्होंने अपना माध्यमिक अध्ययन किया ।

इसके उपरान्त माँ के प्रोत्साहन से उन्होंने १९२१ में कानपुर `क्राइस्ट चर्च कॉलेज` में प्रवेश लिया । पढाई के साथ साथ वे `प्रभा`, `शारदा`, एवं `प्रताप` नामक पत्रिकाओं में कहानियाँ और कविताएँ लिखने लगे । लेखक एवं कवि के रूप में वे प्रख्यात होने लगे । कॉलेज की प्रथम वर्षा की परीक्षा सन १९२२ में उतीर्ण हुए । सन १९२३ में जब वे इंटरमीडिएट के द्वितिय वर्षा में पढ रहे थे, तब कानपुर नगर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ । इस सम्मेलन के वे सर्वेसर्वा थे, क्योंकि अबतक साहित्य जगत में उन्हें ख्याति मिलने लगी थी । सम्मेलन कार्यों में व्यस्त रहने के कारण वे अपना अध्ययन ठीक तरह से नहीं कर पाये और अनुतीर्ण हो गये । सन १९२४ में फिर से परीक्षा देकर उतीर्ण हुए । इसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी विषाय लेकर एम.ए. द्वितिय वर्षा अनुतीर्ण हुए । भगवती बाबू नौकरी नहीं करना चाहते थे । अत: एम.ए. न करके उन्होंने वकालत पास करने का निश्चय किया और सन १९२८ में वे वकील बन गये । इस तरह उन्होंने अपनी अध्ययन यात्रा का कठिन मार्ग कामयाबी के साथ पार किया ।

क) विवाह --

भगवती बाबू के दो विवाह हुए । सन १९२३ में जब वे इंटर पढ रहे थे तब उनका पहला विवाह हुआ । लेकिन दस साल बाद उनकी पत्नी का स्वर्गवास हुआ । इसीलिए सन १९३४ में उन्होंने दूसरा विवाह किया ।

ड) जीविका --

सन १९२८ में वकालत पास करने के बाद उन्होंने कानपुर में वकालत शुरू

की । लेकिन जिन बातों पर वकालत चलती है, उनपर उनका विश्वास नहीं था । मुक़दमें की तारीख भूलकर वे साहित्य साधना में लगे रहते थे । नौकरी न करने के लिए वकालत एक अच्छा बहाना था । एक जगह पर जमकर न रहना उनके स्वभाव में ही नहीं था । अत १९३० में वे कानपुर छोडकर अपने नजिहाल हमीरपुर वकालत जमाने के उद्देश्य से चले गए । वहीं पर उन्होंने अपना प्रसिध्द उपन्यास `चित्रलेखा` लिखना आरंभ किया । सन १९३१ में मदरी रियासत के राजा के निमंत्रण पर वे वकालत करने प्रतापगढ आ गये । राजा साहब ने वायदा किया कि अपने मुक़दमें वे उन्हीं को देंगे । वस्तुत: राजा साहब उनके प्रति श्रध्दालू थे । इसी लिए किसी भी बहाने उनकी साहयता करना चाहते थे। वर्माजी ने एक प्रकाशन संस्था की योजना राजा साहब के सामने रखी जो उन्होंने तुरंत स्वीकार कर ली । लेकिन रियासती कारिन्दों की कृपा से योजना सफल न हो पायी । वर्माजी स्वाभिमानी व्यक्ति होने के कारण बिना कामकाज किये राजासाहब की छत्रछाया में रहना उन्हें अच्छा नहीं लगा । इसीलिए वे फिर वापस इलाहाबाद चले आये । वह एक ऐसा समय था कि उन दिनों सांप्रदायिकता को लेकर हिंदु-मुस्लिम दोनों में दंगों की लपटें उठी । हिंदु-मुस्लिम एक दूसरे के प्यासे हो गये । सांप्रदायिक दंगों के कारण और बेकारी के कारण वर्माजी की मानसिक स्थिति दयनीय बन गयी । निराशा और अवसाद की भयंकर पीडा से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने `विनोद मिल्स` के उज्जैन के मालिक श्री लालचंद सेठी के यहाँ ढाई सौ रुपये प्रति माह पर नौकरी करना शुरु कर दिया । वहाँ उनके एवाद पत्र लिखना या पढकर सुनाना और सेठी साहब के साथ नाश्ता,भोजन करने के अतिरिक्त कोई काम ही नहीं था । अत: स्वाभिमानी और सच्चे इन्सान होने के कारण किसी की मेहरबानी पर जीना या बिना कामकाज किये मुफ्त में रुपया कमाना उन्हें अच्छा नहीं लगता था । वहाँ भी त्यागपत्र देकर वे वापस इलाहाबाद चले आये । अपना स्वाभिमानी स्वभाव, भावुकता के कारण उन्हें आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पडा । सन १९३३ में उनका प्रथम काव्य संग्रह `मधुकण` प्रकाशित हुआ । रसिक जनों को उनकी

कविताओं से अद्भुत आनंद प्राप्त हुआ । सन १९३५ में वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन में साहित्य मन्त्री निर्वाचित हुए । इस के बाद ही कलकता फिल्म कारपोरेशन ने उन्हें कलकता आमंत्रित किया । वर्माजी वहाँ अधिक दिनों तक न रह सके और प्रयाग लौटकर अपनी प्रकाशन योजना में उलझ गये ।

सन १९३९ में वे त्रिपुरी काँग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित होने गये थे । पर कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी कि वहाँ से कलकता चले गये । उन दिनों कलकत्ते में ` विचार ` नामक साप्ताहिक पत्र निकल रहा था । वर्माजी का सहयोग पाकर वह पत्र चमक गया किंतु वर्माजी के भाग्य में एक स्थान पर रहना शायद नहीं था । वे वहाँ भी अधिक दिनों तक नहीं रह सके । १९४० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बनाये गए । उसी वर्ष फिल्म निर्देशक केदार शर्मा ने ` चित्रलेखा ` उपन्यास पर फिल्म बनाना प्रारंभ कर दिया । इसी वर्ष उनका ` मानव ` कविता संग्रह भी प्रकाशित हुआ । सन १९४२ में बॉम्बे टॉकीज में सिनेटियों के हैसियत से आमंत्रित किया और वे फिल्म जगत में आ गये ।

सन १९४२ से लेकर १९४७ तक वे बम्बई की फिल्मी दुनिया में रहें । इसी बीच उन्होंने ` टेढे-मेढे रास्ते ` महत्वपूर्ण उपन्यास लिखा । फिल्मी दुनिया के खोखलेपन से वे ऊब गये थे । उसी समय लखनऊ से प्रकाशित होनेवाले ` दैनिक नवजीवन ` के प्रधान सम्पादक के पद पर उन्हें आमंत्रित किया गया । किन्तु शीघ्र ही वहाँ के राजनीति से त्रस्त हो गये और १९४८ में प्रधान सम्पादकिय छोड दी । सन १९४९ में ` आखिरी दाँव ` उपन्यास समाप्त कर वे उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन के प्रचार कार्य में लग गये । सुगम-संगीत तथा साहित्यिक कार्यक्रमों के निर्देशक के पद पर भी कुछ दिनों उन्होंने कार्य किया । रेडियो की इस नौकरी के सिलसिले में वे कुछ वर्ष दिल्ली में रहे । किंतु भगवतीचरण वर्मा जैसे स्वतंत्र प्रवृति के व्यक्ति के लिए नौकरी करना असंभव था । सन १९५७ में उन्होंने रेडियो की नौकरी छोड दी और दिल्ली से लखनऊ वापस चले आये । नौकरी छोडने के विषाय में उन्होंने स्वयं लिखा हैं -- " इस साहस का एक कारण और था , मेरे पिछले उपन्यासों का उस समय तक काफी प्रचार हो चुका था और मुझे इतनी रायल्टी मिलने लगी थी कि

मैं भूखों न मरने पाऊँ ।" तब से भगवती बाबू स्वतंत्र रूप से साहित्य सृजन करते रहे । १९५७ से लेकर वे लगातार उपन्यास लिखते रहे और आजन्म साहित्य की सेवा करते रहे ।

इस तरह उन्हें उनके जीवन में स्थिरता बहुत देर में ढलती उम्र में प्राप्त हुयी । आर्थिक और पारिवारिक संघर्षों के बावजूद और नौकरी में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने किसी न किसी प्रकार साहित्य का निर्माण किया है । फिल्मी जगत में फिल्मों के लिए कहानी एवं संवाद लेखन का कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया । पत्र-पत्रिकायें निकालकर सम्पादन कार्य भी किया । नौकरी में उलझे होते हुए भी उन्होंने कविताएँ, नाटक, निबंध, कहानी एवं उपन्यास लिखे । सन १९५७ में आकाशवाणी की नौकरी छोडकर अपनी ५३ वर्ष की आयु से लेकर अंतीम घडी तक अपने आप को हिन्दी साहित्य के लिए समर्पित किया और विविध मौलिक कृतियों को जन्म दिया ।

सन १९८१ अक्तूबर में ७८ बरस की आयु में गले के कर्करोग के कारण दिल्ली के आयुर्विज्ञान अस्पताल में उनका देहान्त हुआ ।

२. व्यक्तित्व --

वस्तुत: बहुमुखी प्रतिभा के धनी भगवती बाबू का व्यक्तित्व कुछ ऐसा आकर्षक था कि जो उनके परिचित थे, उन्हें वे अत्यंत मधुर मालूम होते थे । प्रसिध्द राजनीतिज्ञ और हिन्दी के पुराने पत्रकार पंडित कमलाकर त्रिपाठी के कथानुसार " मुझे तो उनकी सभी बाते अच्छी लगती है :-- सबसे ज्यादा उनका पान खाना, उनकी अचकन चौडी मोहरा का पैजामा उनकी चाल, " मानो लखनऊ नाप लेंगे) उनके लिखने की शैली । " इससे यह स्पष्ट होता है कि भगवती बाबू का व्यक्तित्व प्रभावशाली था ।

भगवती बाबू सफेद खद्दर का कुर्ता - पाजामा पहनते थे । सिर पर तिरछी टोपी पहनना उन्हें बेहद पसंद था । हमेशा पान खाते थे । उनके स्वभाव में मस्ती और फक्कडपन था । वे एक जिन्दादिल इन्सान थे । स्पष्टवादिता उनके स्वभाव की एक विशेषाता थी । भावना प्रधान और मानवता के वे मूर्तिमंत प्रतीक थे । हमेशा अपने कार्य में व्यस्त रहना उनका स्वभाव था । भगवतीचरण वर्मा स्वाभिमानी व्यक्ति थे । वे अपनी प्रशंसा और आलोचना की परवाह नहीं करते थे । उन्होंने स्वयं इस विषाय में कहा है -- " यह तो सत्य नहीं है कि, प्रसंसा मुझे बुरी लगती है ,लेकिन प्रसंसा की भूख मुझमे नहीं है और निंदा से मुझे चोट अवश्य लगती है, लेकिन निंदा का भय मुझमें नहीं है । " ७

वर्माजी का जीवन सत्य पर आधारित था । अंधश्रद्धा का वे तिरस्कार करते थे । अध्यात्मवाद पर उन्हें आस्था नहीं थी । कृत्रिमता से उन्हें नफरत थी । जो व्यक्ति परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकता वही अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों से बचता फिरता है । यह पलायनवाद उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था । वे आदि से अंत तक यथार्थवादी रहे । जीवन में भोग को वे महत्व देते थे । उन्मुक्त भावनाओं में वे विश्वास करते थे । फिर भी उनका भोगवाद विकृत नहीं था । क्योंकि उच्छृंखला भावनाओं की तृप्ति को वे हेय मानते थे । परम्परागत मान्यताओं का दूषित रूप उन्हें मान्य नहीं था । परिस्थिति के साथ पूर्वापार मान्यताओं में परिवर्तन होना वे स्वाभाविक मानते थे । व्यक्ति स्वातंत्र्य को वे आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य मानते थे । उनकी व्यक्तिवादी चेतना सामाजिक और व्यापक थी ।

भगवती बाबू के अंदर की जीवनी शक्ति और त्रस्तीने उन्हें हर स्थिति का सामना करने की एक ऐसी भक्ति प्रदान की थी जो हमेशा अजेय बने रहते थे । उनकी इसी शक्तिने जीवन की विषामतक स्थितियों में भी उनके साहस को नष्ट होने दिया । नियतीपर उनका पूरा विश्वास था । मानव प्रकृति के अनुरूप आचरण करता है , वह जो कुछ करता है परिस्थिति के कारण करना पडता है, इस बात पर उनका पूरा विश्वास था । लेकिन फिर भी परिस्थिति के बहाव में आकर हद से

आगे बढना और अपनी नैसर्गिक इच्छाओं को दबाना उन्हें मंजूर नहीं था । उनके नियतीवाद में दु:खवाद, अकर्मण्यता और निराशावाद के लिए कोई स्थान नहीं था । अपनी इन्हीं मान्यताओं के कारण कठिन परिस्थितियों में रहकर भी वे अपना जीवन सफल कर पाये ।

वे एक तीव्र बुध्दि के व्यक्ति थे । भावुक प्रकृति तथा कवि प्रतिभा उन्हें जन्म से मिली थी । किताबों द्वारा प्राप्त ज्ञान से अधिक महत्व वे अनुभव द्वारा अर्जित ज्ञान को देते थे । वे स्वाभिमानी तो थे ही और एक सीमातक अनासक्त भी । उनका स्वभाव विनोदप्रिय और हंसमुख था । उनके व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषाताओं के कारण जीवन की विषमतम स्थितियों में उनका साहस बना रहा । एक प्रकार से उनका जीवन कर्तृत्व और सामर्थ्य का दीपस्तंभ है ।

व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू --

अ) वकील --

वकील की हैसियत से वर्माजी अपने जीवन में सफल नहीं हो पाये और होना भी नहीं चाहते थे । उनका जीवन सत्य पर आधारित था । झूठ से उन्हें घृणा थी । इसी कारण उन्होंने अपना यह पेशा छोड दिया । उन्हें तो सिर्फ साहित्य में ही रुचि थी । अत: वे वकालत छोडकर साहित्य साधना में लगे रहे ।

ब) पत्रकार --

उनके व्यक्तित्व का ओर एक पहलू पत्रकार के रूप में दिखाई पडता है । स्वयं पत्र-पत्रिकाएँ निकालकर उनका संपादन कार्य भी किया है । इसीलिए हम कह सकते है कि वे एक सफल तथा कुशल संपादक भी थे । अनेक पत्र-पत्रिकाओं में अपनी कविताएँ, कहानियाँ, छपवाकर हिन्दी साहित्य में उन्होंने अपना योगदान दिया है । कलकता में निकले `विचार` नामक साप्ताहिक पत्र में उन्होंने कार्य किया है ।

सन १९४८ में लखनऊ वापस आकर `नवजीवन` के प्रधान सम्पादक का कार्य करते रहे । इस प्रकार वर्माजी एक सफल पत्रकार भी थे ।

क) कवि --

बचपन से ही भगवतीबाबू में कवि के लिए आवश्यक प्रतिभा और भावुकता यह गुण थे । पढाई का चरका तो बचपन से ही था । उनका युवा हृदय कुछ न कुछ लिखने के लिए मचल जाता था । इसका नतीजा यह हुआ की बचपन से ही उनकी लेखनी से कविताएँ लिखी जाने लगी । `प्रताप` नामक नियतकालिका में उनकी कविताएँ प्रकाशित होने लगी । कविता लिखने की उन्हें आदत सी लग गई और वे अनेक मासिक पत्रिकाओं में अपनी कविताएँ भेजने लगे । उनकी प्रकाशित कविताओं को पढकर रसिकजन उन्हें चाहने लगे । स्वतंत्रता आंदोलन के जोश में उन्होंने राजनीतिक कविताओं की रचना भी की । छायावादी प्रवाह में खूब बहे । `हम दिवानों की क्या हस्ती` उनकी इन्हीं दिनों की कविता है । उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी । उनकी `भैंसागाडी` कविता बहुत लोकप्रिय हुयी । `महाकाल`, `कर्ण`, `द्रौपदी` जैसी पौराणिक आख्यानों पर आधारित कविताएँ लिखी । आधुनिक कविता में उनका अपना एक अलग स्थान है । `मधुकण`, `प्रेमसंगीत `, `मानव` आदि उनके उल्लेखनीय काव्यसंग्रह हैं । प्रेम,प्रणय , देववाद,प्रगतीशीलता, मानवतावाद आदि उनकी कविताओं को मानदण्ड हैं ।

अत: हम यह कह सकते हैं कि,साहित्य जगत में उनका पदार्पण पहले कवि के रूप में हुआ ।

ड) उपन्यासकार --

यद्यपि वर्माजी ने साहित्य के क्षेत्र में कविता के माध्यम से पदार्पण किया फिर भी उन्हें सबसे पहले एक सफल उपन्यासकार माना जाता है । हास्य-व्यंग्य के पुट तार्किकता,समस्याओं का प्रस्तुतीकरण आदि बातें हमें उनके उपन्यासों

में देखने मिलती हैं । उन्होंने घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, समस्याप्रधान, उद्देश्यप्रधान और विचारप्रधान उपन्यास लिखे हैं । वस्तुविन्यास की सुचारुता, इतिवृत्त की रोचकता, बाह्य एवं आंतरिक द्वन्द्व की तीव्रता हम उनके उपन्यासों में पाते हैं । उनके उपन्यास लेखन का आरंभ समस्या प्रधान उपन्यास ` चित्रलेखा ` से हुआ । विषाय और समस्या को तर्क के माध्यम से उभारना उनकी आदत थी । ` चित्रलेखा ` , ` रेखा `, ` तीन वर्षा `, ` टेढे-मेढे रास्ते `, ` सामर्थ्य और सीमा `, ` सीधी-सच्ची बातें, ` आदि उपन्यासों में उनकी तार्किता के दर्शन होते हैं । उनके शुरुन के उपन्यासों की तुलना में ` भूले बिसरे चित्र ` , ` सामर्थ्य और सीमा `, ` सीधी-सच्ची बातें ` आदि उपन्यासों में प्रौढता और अधिक सफलता दिखाई देती हैं । अपने सभी उपन्यासों में उन्होंने नारी का कोई न कोई रूप उद्घाटित किया हैं । समाज की उपेक्षित नारियों को उन्होंने ऊँचा स्थान दिया हैं ।

भगवती बाबू के व्यक्तित्व और लेखन दोनों में हास्य और व्यंग्य की झलक दिखाई देती हैं । इसी कारण उन्हें जहाँ भी अवसर मिला उन्होंने अपनी इस प्रवृत्ति का खूब प्रयोग किया हैं । उपन्यासों में भी उनकी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं । उनका ` अपने खिलौने ` यह उपन्यास आरंभ से अंत तक हास्य-व्यंग्य से भरा हुआ हैं ।

उपन्यास के माध्यम से वर्माजी ने समाज की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन किया हैं । साथ ही हास्य-व्यंग्य शैली के द्वारा उनपर प्रहार किया हैं । उनके प्रभावी उपन्यासों के कारण ही उन्होंने हिन्दी साहित्यकाश में अपना अमीट स्थान बना दिया हैं ।

इ) कहानीकार --

वर्माजी के व्यक्तित्व का एक पहलू कहानीकार के नाते हमारे सामने आता हैं । उनमें कहानी गढने की अद्भूत क्षमता थी । उन्होंने कहानियाँ भले ही कम लिखी हैं, पर उनमें विविधता के दर्शन होते हैं । काम, क्रोध, लोभ, स्वार्थी और नि:स्वार्थी वृत्ति, प्रेम, अर्थलिप्सा, ढोंगी वृत्ति दिखावे की भावना आदि मनुष्य के

विविध पहलुओं को उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा उजागर किया है । वर्तमान समाज की सभ्यता और उससे उत्पन्न विषमता पर उन्होंने प्रहार किया है । नारी जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याएँ एवं मध्य और निम्न वर्ग की आर्थिक समस्याएँ, धर्माडम्बर, अंधश्रध्दा तथा विभिन्न वर्ग-संघर्ष आदि सामाजिक समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है । इन गंभीर समस्याओं का चित्रण करने के बावजूद भी उनकी विनोदी प्रवृत्ति नहीं छिपी है । समस्याने उनकी कहानियों के विचार पक्ष को बोझिल नहीं बना दिया है । बीच-बीच में हास्य और विनोद के मिश्रण ने उनकी कहानियों को और भी अधिक रोचक और मनोरंजक बना दिया है । उनकी कहानियाँ हास्य-व्यंग्य से युक्त होने के साथ ही यथार्थ और विचारो--त्तेजक भी है ।

उन्होंने अपनी कहानियों में मानव-जीवन के ऊँचे उद्देश्य और नये नैतिक मानदण्डो की स्थापना की है । रोचकता वर्माजी की कहानियों में सबसे बडा आकर्षण है । पाठकों पर प्रभाव डालना उनका उद्देश्य है । वर्माजी के कहानियों के अन्त आकर्षक और प्रभावोत्पादक है । उन्होंने पत्रशैली, आत्मकथनात्मक शैली, अन्य पुरुष प्रधान शैली, सलाव शैली आदि शैलीयों में कहानियाँ लिखी । उनकी कहानियों की भाषा सीधी, सरल, सुबोध, पात्रानुकूल, भावानुकूल और प्रभावोत्पादक दिखाई देती है ।

अत: वर्माजी का कहानी क्षेत्र सीमित होते हुए भी उसमें विविधता, रोचकता, सादेश्यता दिखाई देती है । प्रेमचंद ने जिस प्रकार जमींदार, कृषाक, मजदूर, क्लर्क सभी को लेकर लिखा है वैसा वर्माजी नहीं लिख पाये है । उनकी कहानियों का क्षेत्र शहरी जीवन तक और शहरी जीवन में भी बहुत कुछ बुध्दिजीवी वर्ग तक ही सीमित रह गया है । इसका कारण यह है कि वे, स्वंय शहरी वातावरण में रहे और वहाँ की गतिविधियों को उन्होंने महसूस किया ।

`इन्स्टालमेन्ट`, `दो बाँके`, `राख और चिनगारी` आदि उनके प्रसिध्द कहानी संग्रह है । `प्रायश्चित`, `दो बाँके` , `राख और चिनगारी`, `आवारे`, `दो पहलू`, `उत्तरदायित्व`, `कायरता` आदि उनकी उल्लेखनीय

चिरस्मायी कहानियाँ हैं । कहानीकार के नाते उनका साहित्य जगत में अपना अलग स्थान है ।

१. कृतित्व --

हिन्दी के उपन्यासकारों में भगवतीचरण वर्मा का स्थान अत्यंत ऊँचा है । भगवती बाबू की प्रतिमा बहुमुखी रही है। उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध होने के पूर्व वे कवि और नाटककार के रूप में ख्यात हो चुके हैं । साथ ही अपने विचारों की अभिव्यक्ति वे लेखों द्वारा भी करते रहे । किसी भी साहित्यकार को अच्छी तरह समझाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके पूर्ण कृतित्व का अध्ययन किया जाय ।

साहित्य - सृजन का आरंभ --

साहित्य के क्षेत्र में वर्माजी का प्रवेश कवि के रूप में हुआ । कवि प्रतिभा इनमें बचपन से ही थी । छायावादी प्रवृत्तियों को में भी उनका नाम लिया जाता था । स्वतंत्रता आंदोलन के जोश में उन्होंने राजनैतिक कविताएँ भी लिखी ।

भगवती बाबू काव्य के बारे में डा.नगेंद्रजी का कहना है, " सभ्यता और संस्कृति के जिस संक्रांति काल में भगवतीचरण वर्मा ने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ किया था उस समय किसी भी सृजनशील व्यक्तित्व का कविता से बच निकलना असंभव था । एक संवेदनशील मन पर उस हलचल से भरे युग में इतने प्रभाव पडते रहे होंगे जिन्हें गद्य में ही बाँधना कठिन रहा होगा । वर्माजी अपने को मूलत: उपन्यासकार मानते हैं ।" [८]

सन १९२२-२३ 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका में उन्होंने गद्यलेख लिखना शुरु किया । इसी समय कहानीकार विश्वम्भरनाथ कौशिक के सम्पर्क में उन्हें कहानियों में दिलचस्पी होने लगी और वे कहानियाँ लिखने लगे ।

सन १९२४ में जब वे प्रयाग विश्वविद्यालय में बी.ए.पढ रहे थे

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उन्होंने अपना ` पतन ` उपन्यास लिखा ।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने कविता, कहानी , निबंध, नाटक , उपन्यास आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया और निरंतर साहित्य साधना में जुटा रहकर अनेक मौलिक कृतियों को जन्म दिया । उनके कृतित्व का संक्षिप्त लेखा-जोखा आगे प्रस्तुत किया है ।

अ) काव्य --

भगवतीचरण वर्मा अधिकांश लेखकों की तरह साहित्य क्षेत्र में काव्य के माध्यम से आये थे । अपने साहित्यिक कृतित्व के संबंध में न केवल साहित्यिक जीवन का अर्थ बताया है बल्कि कभी-कभी उन्होंने कविता को अपनी एक प्रवृति भी महसूस किया । उनकी स्वीकारोक्ति ` कविता एक प्रवृति है, तबियत नहीं मानती थी तो जब-तब में लिख लेता था ।[?] उन्हें स्वभावत: कवि सिध्द करती है । उनके विचार एवं जीवन-दर्शन की सहज अभिव्यक्ति उनके काव्य में प्राप्त होती है । उनके प्रत्येक कविता संग्रह पर यहाँ विचार किया जा रहा है --

१) मधुकण --

१९३२ में भगवती बाबू का पहला काव्य-संग्रह ` मधुकण ` प्रकाशित हुआ । इस काव्य-संग्रह पर छायावाद का प्रभाव है । प्रेम की पीडा, तृष्णा-जन्य आकांक्षाएँ तथा सृष्टि की अनित्यता कविताओं के प्रमुख विषय हैं । ` मेरी प्यास ` और ` आत्म-समर्पण ` में रूप के उपभोग की तीव्र लालसा है । इन कविताओं में भगवती बाबू का नियतिवादी तथा व्यक्तिवादी स्वर स्थान - स्थान पर उभरा है ।

` नूरजहाँ की कब्र पर ` लम्बी कविता है, जो इस संकलन की सबसे सफल रचना कही जा सकती है । ` तारा ` गीत - एकांकी है, जिसमें तारा और चन्द्रमा के माध्यम से पाप-पुण्य, प्रेम और तृष्णा के संबंध में विचार किया है । ` संसार `

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

नामक लम्बी रचना पंत की ' परिवर्तन ' के अत्यंत निकट रहती है । इसी श्रेणी में ' नववधू के प्रति ' कविता भी रखी जाती है ।

२) प्रेमसंगीत --

१९३६ में प्रकाशित प्रेम-संगीत वर्माजी का द्वितीय कविता संकलन है । शीर्षक के अनुसार सभी रचनाएँ शृंगार रस की हैं । प्रेम के भौतिक पक्ष के प्रति आसक्ति और उसे भोगने की आकांक्षा काव्य का प्रमुख स्वर है ।

" यौवन की इस मधुरशाला में
हैं प्यालों का ही स्थान प्रिये ।
फिर किसका भय ? उन्मत्त बनो
है प्यास यहाँ वरदान प्रिये ।। " १०

उपालम्भ की कुछ सुंदर कविताएँ इस संकलन में हैं । उसकी प्रसिद्ध ' हम दिवानों की क्या हस्ती ' इसी संकलन में हैं ।

३) मानव --

इस संकलन का प्रकाशन १९४० में हुआ । मानव समाज पर कवि के दृष्टिपात और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप ये कविताएँ सामने आयी हैं । इस में ' कवि का विशद ज्ञान ', ' कवि का स्वप्न ' और ' एक रात ', ' जीवन-दर्शन, ' विषमता ' ' भैसागाडी ', ' ट्राम ', ' राजा साहब का वायुयान ', ' विस्मृति के फूल ' आदि कवितायें हैं ।

४) एक दिन --

' एक दिन ' भगवती बाबू की मुक्त छंद की कविताओं और विचार-प्रधान ललित-गद्य का संकलन है । अधिकांश कवितायें बदलते हुए सामाजिक परिवेश पर हैं और उनमें व्यंग्य का स्वर प्रधान है ।

५) त्रिपथगा --

१९५६ में प्रकाशित संग्रह `त्रिपथगा` में भगवती बाबू ने तीन रेडियो रूपक संगृहित हैं। `महाकाल` सृष्टि में मानव की स्थिति पर विचार करनेवाला प्रतीकात्मक रूपक है। शेष दो `कर्ण` और `द्रौपदी` महाभारत की कथाओं पर आधारित हैं।

६) रंगो से मोह --

१९६८ में प्रकाशित इस संकलन में वर्माजी की अपेक्षा कृत प्रौढ रचनाएँ दिखलाई पडती हैं। `रंगो सेमोह` रस संकलन की सर्वश्रेष्ठ रचना है। `उल्टी-सीधी` व्यंग्यप्रधान रचना है।

ब) कहानी --

हिन्दी कथा-साहित्य जब आकार धारण करने लगा था तब भगवती बाबू ने कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया था। अपनी कहानियों के द्वारा उन्होंने कहानी को शक्ति और गति प्रदान की। रमेश बक्शी के शब्दों में --

" श्री भगवतीचरण वर्मा की कहानियाँ औत्सुक्य की दृष्टि से कम्प्लीट होती हैं। इंस्टालमेन्ट, व्हिक्टोरिया क्रास, प्रायश्चित, दो बाँके, आदि छोटी-छोटी ट्रिक कहानियाँ हैं, जिनमें चरम सीमा पर सारा औत्सुक्य केन्द्रित हो जाता है और हमारी पूर्व कल्पना शॉक देकर अप्रत्याशित अंत से कहानी को रोचक बना देती है।

१) इंस्टालमेन्ट --

`इंस्टालमेन्ट` भगवती बाबू का पहला कहानी संग्रह है। इनकी कहानियों को पढकर लगता है कि कहानी कहना ही लेखक का उद्देश्य है। कुछ कहानियाँ - घटना प्रधान हैं। `प्रेजेण्टस`, `वर्मा हम भी आदमी थे काम के`, `कुंवर साहब मर गये`, `एक अनुभव`, `एक विचित्र चक्कर है`, `परिचयहीन यात्री`,

`इंस्टालमेन्ट` ऐसी ही कहानियाँ हैं । भगवती बाबू का किस्सागो - स्वरूप इन कहानियों में सामने आता है । इस संग्रह में उनकी `विक्टोरिया क्रास`, `मुगलों ने सल्तन बक्श दी,`` प्रायश्चित` जैसी प्रसिध्द कहानियाँ भी संकलित हैं । `अर्थ - पिशाच`, `बेकारी का अभिशाप,बाय`, `एक पेग ओर` कहानियाँ आधुनिकता सभ्यता की अर्थ-लिप्सा का चित्रण करती हैं ।

२) दो बाँके --

डा.अष्टभुज पाण्डेय के अनुसार `वर्माजी के कथानक सरस,एकोन्मुख, क्षिप्र और यथार्थ होते हैं ।`[११] उक्त कथन की सत्यता `दो बाँके` संकलन से सिध्द होती हैं । इस संकलन की विशेषाता इसकी छोटी-छोटी किन्तु तीव्र भाव-बोध की कहानियाँ साफगोई की कहानियाँ हैं ।

इस संकलन में `विवशता`, `नाजिर मुंशी`, `तिवारत का नया तरीका`, `अनशन`, `लाला तिक्कमी लाल`, `कुंवर साहब का कुता` और `दो बांके` आदि कहानियाँ हैं ।

३) राख और चिनगारी --

`राख और चिनगारी` कहानी संग्रह पूँजीवादी युग में अर्थ के कसते हुए पंजों में सिसकती मानवीय मजबूरियों का संसार प्रस्तुत करता हैं । इस संकलन में `वह फिर नही आयी`, `राख और चिनगारी`, `आवारे` , `खिलाफ और नरक` आदि सशक्त रचनाएँ हैं ।

क) नाटक --

प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों की विकसित होती हुयी परम्परा में भगवतीचरण वर्मा का भी योगदान रहा हैं । उन्होंने दो पूर्ण नाटक और कुछ एकांकी लिखे हैं । उनके नाटक-साहित्य में उनकी सामाजिक प्रतिबध्दता दिखलाई पडती हैं । व्यक्ति के

प्रति उनका जैसा आग्रह उपन्यासों में दिखलाई पडता है, नाटकों में नहीं। डा. विजय बापट के अनुसार "कथानक में विशेष रुचि न लेकर नाटककार (भगवती बाबू) ने जीवन के किसी महत्वपूर्ण पहलू या विशेष दृष्टिकोण को हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।" १२

१) बुझाता दिपक --

इसमें भगवती बाबू के तीन एकांकी और एक नाटक संगृहीत हैं। "दो कलाकार" और "सबसे बडा आदमी" हास्य-प्रधान एकांकी है। "चौपाल" में व्यंग्य प्रधान एकांकी है। "बुझाता दीपक" पूर्ण नाटक है। राजनैतिक और सामाजिक जीवन में चरित्र का जो संकट विद्यमान है उसी संकट को नाटक की विषयवस्तु बनाया गया है। सुषमा, उन्हीं बुध्दिजीवियों में से है जो ईमानदारी का आदर तो करते हैं, किन्तु ईमानदार व्यक्ति के कन्धे से कन्धा लगाकर नहीं चलते। जब तक ऐसे व्यक्ति आगे बढकर अपने प्राणों का स्नेह दान नहीं करेंगे तब तक मानवता का दीपक नहीं जल सकता। नाटक का अंत इस आशा के साथ हुआ है कि एक दिन यह संभव हो सकेगा।

२) रुपया तुम्हें खा गया --

इस नाटक में लेखक आधुनिक समाज की अर्थलिप्सा पर कठोर प्रहार करना चाहता है। तीन अंकों का यह नाटक वणिक्-संस्कृति पर उस तरह प्रहार नहीं कर पाता जैसा कि लेखक चाहता है। सम्पूर्ण नाटक एक धनी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को ही उभार सका है। वास्तव में सेठ मानिकचंद के जीवन की विभिन्न घटनाओं का समावेश नाटक में इतना अधिक हो गया है कि नाटक सम्पूर्ण युग की कहानी नहीं बन सका है।

ड) निबंध --

भगवती बाबू ने हिन्दी के निबंध-साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। उनके निबंधों को हम दो वर्गों में रख सकते हैं। पहले वर्ग में उनके साहित्यिक

निबंध हैं जिनमें उन्होंने साहित्य की विधाओं पर अपने मत प्रकट किये हैं । दूसरे वर्ग में वे निबंध आते हैं जिनमें उन्होंने समाज की समस्याओं पर विचार किया है ।

१) साहित्य की मान्यताएँ --

इस संकलन के निबंधों के माध्यम से लेखक ने साहित्य के विभिन्न पक्षों पर तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपने विचार व्यक्त किये हैं । पहले सात निबंन्ध चिंतन-प्रधान हैं जिनमें लेखक साहित्य पर, शास्त्रीय मत - मतान्तरों में न उलझाकर, अपना आत्म-मंथन सामने रखता है ।

लेखक ने अपने पहले ही निबंध ` भावना, बुध्दि, और कर्म ` में कला के विषाय में अपनी विचारधारा प्रकट की है । ` साहित्य के स्त्रोत ` वे लिखते हैं -- ` कला का स्त्रोत न भावना में है न बुध्दि में है । इस अंत:प्रेरणा को नियमों में नहीं बांधा जा सकता । यह अंत:प्रेरणा एक रहस्य की भाँति हरेक मनुष्य के अंदर स्थित है, इसकी मनुष्य के जीवन में एक महत्वपूर्ण सत्ता है ।" [१३]

` साहित्य में शब्द का स्थान ` निबंध में काफि कुछ नया और गंभीर संभावनाएँ थी । विषाय अत्यंत मौलिक है किन्तु कोई गहरी बात लेखक कह नहीं सका । शेष निबंध चिंतन प्रधान न होकर विश्लेषणात्मक हैं जिनमें साहित्य की विधाओं पर चर्चा है । लेखक ने उपन्यास, कहानी, कविता, रेखाचित्र, निबंध , शब्दचित्र, नाटक पर अपने विचार रखे हैं ।

२) हमारी उलझन --

इस संकलन के निबंध विश्लेषणात्मक न होकर विवेचनात्मक हैं । ` परिग्रहण और दान ` में लेखक की विचारधारा काफी मौलिक है । ` विचार-विनिमय ` निबंध में लेखक कहते हैं, ` दूसरों को देवता मत मानो दूसरों को देवता मानना अपने अंदर असमर्थता से भरी गुलामी को पालना है । ` अहम का विकास `, ` दीवाली `, हरखू की बाराते, ` होली ` आदि निबंध भी संकलित हैं ।

इ) चित्रालेख -- वास्तवता --

`वास्तवता` नामक चित्रालेख भगवती बाबू ने मूल रूप से फिल्म के लिए लिखा था इसलिए उसमें फिल्मी नाटक के ही तत्व विद्यमान हैं। इसे हम हिन्दी में प्रकाशित प्रथम चित्रालेख के रूप में स्वीकार करते हैं। `चित्रालेख` की कहानी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता `अभिसार` पर आधारित है।

ई) उपन्यास --

साहित्य के सभी अंग-गीत, प्रबन्ध काव्य, नाटक और निबंध - किसी न किसी रूप में मानवीय अनुभूतियों और अनुभवों को व्यक्त करते हैं, किन्तु इस दृष्टि से कथा सर्वोत्तम है। भगवतीचरण वर्मा भी हिन्दी उपन्यास विधा के एक सफल उपन्यासकार हैं।

१) पतन --

`पतन` भगवती बाबू का प्रथम उपन्यास है, जिसका प्रकाशन १९२८ में हुआ। इसकी कथा एक साधारण-सी जासूसी अथवा घटना प्रधान कहानी होकर रह गयी है। `पतन` का कथानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लिए हुए है। कहानी वाजिद अलीशाह के समय की है, जब अवध का राज्य पतन के कगार पर खडा था। नवाब साहब की विलासिता राज्य के लिए खतरनाक साबित हो रही थी। वजीर अली नकी नवाब की जडें खोद रहा था और नवाब साहब के नाम पर मनमानियाँ कर रहा था। भगवती बाबू की नवाब के प्रति पर्याप्त सहानुभूति परिलक्षित होती है। लेखक द्वारा चित्रित नवाब अपने संभावित पतन को `खुदा की मर्जी` स्वीकार करते हुए परियों के अखाडे में व्यस्त दिखलाई पडते हैं जबकि उनके राज्य में चारों ओर रिश्वत और भ्रष्टाचार का बोलबाला था।

२) चित्रलेखा --

सन १९३४ में प्रकाशित `चित्रलेखा` भगवती बाबू का दूसरा उपन्यास है। ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से तथा सर्जनात्मक स्तर पर भी यह हिन्दी की अत्यंत

महत्वपूर्ण कृति है । इस रचना का उद्देश्य ही समाज की रूढ नैतिक मान्यताओं से असहमति व्यक्त कर व्यक्ति की विचारधारा को महत्व देना है । इसके महत्व का अन्य कारण लक्ष्मीकान्त वर्मा ने यह माना कि ` इस उपन्यास से उन नये मूल्यों के स्वर अधिक उभरकर आने लगे जो अभी तक दबे थे और संस्कारों के बोझ से कराह रहे थे । यही नहीं ` चित्रलेखा ` उन अनेक सामाजिक समस्याओं की पूर्ति थी जो ` सेवासदन `, ` प्रेमाश्रम `, ` कर्मभूमि ` और ` रंगभूमि ` में प्रेमचन्द द्वारा प्रस्तुत की गयी थी ।" [१४]

पाप और पुण्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उपन्यास की रचना हुयी है । यह लेखक का कौशल है कि उसने कथानक अत्यंत सुंदर और समस्या के अनुकूल चुना । महाप्रभू रत्नांबर के दो शिष्य श्वेतांग और विशालदेव अपने गुरू से पाप के विषय में जानने की इच्छा प्रकट करते हैं । रत्नांबर पाप के स्वरूप से उनका साक्षात्कार कराने के लिए दो अलग व्यक्तियों को सौंप देते हैं । श्वेतांक सामंत बीजगुप्त का सेवक बनकर तथा विशालदेव योगी कुमारगिरि का शिष्य बनकर एक ही समस्या का समाधान पाने का प्रयास करते हैं । बीजगुप्त सांसारिक सुखों पर विश्वास करनेवाला व्यक्ति है तो कुमारगिरि त्यागी एवं संयमी संन्यासी है ।

३) तीन वर्षा --

` तीन वर्षा ` सन १९३६ में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास में भगवती बाबू ने आधुनिक समाज का चित्रण किया है । ` तीन वर्षा ` की कहानी से लेखक यह सिध्द करने में सफल हुआ है कि प्रमा जो मात्र अपनी स्थिति के कारण उच्च वर्ग की महिला कही जाती है , वास्तव में वेश्या है और सरोज जो वेश्या दिखलाई पडती है ` अपने हृदय से वेश्या नहीं है ।

४) टेढे-मेढे रास्ते --

सन १९४६ में प्रकाशित ` टेढे-मेढे रास्ते ` भगवती बाबू का विशुध्द राजनैतिक उपन्यास है । विशाल कलेवर का यह उपन्यास हिन्दी में अपने ढंग का है ।

हिन्दी में ऐसा कोई दूसरा उपन्यास नहीं है जिसमें विभिन्न राजनैतिक वादों, विचारधाराओं तथा राष्ट्रीय हलचल को ही विशुध्द कथ्य का स्थान प्राप्त हो सका है ।

५) आखिरी दाँव --

सन १९५० में प्रकाशित उपन्यास ` आखिरी दाँव ` मानवीय नियती की अस्थिरता को दर्शाता है । यों उपन्यास में पूँजीवादी युग में पनपती अर्थ-पिपासा पर काफी चर्चा है और कई स्थलों पर लेखक आधुनिक युग के सामाजिक मसलों, विशेषा कर स्त्री-पुरुषा संबंध की नैतिकता की समस्या से उलझाता दिखलाई पडता है । किन्तु वास्तव में यह सब ` बाइ-द-वे ` हैं अथवा ऊपरी । ` आखरी दाँव ` के कथानक के सभी उपकरण जीवन की अस्थिरता और अनिश्चिता सिध्द करते हैं ।

६) अपने खिलौने --

सन १९५७ में प्रकाशित भगवती बाबू के उपन्यास ` अपने खिलौने ` ने हिन्दी उपन्यास क्षेत्र की एक बडी कमी को दूर किया था । ` अपने खिलौने ` एक स्तरीय हास्य-व्यंग की समृध्द परम्परा की दृष्टि महत्वपूर्ण उपन्यास है । ` अपने खिलौने ` न केवल भगवती बाबू के उपन्यासों में बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी उपन्यास साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है ।

७) भूले - बिसरे चित्र --

सन १९५९ में प्रकाशित ` भूले -बिसरे चित्र ` को निर्विवाद रूप से भगवती बाबू की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जा सकता है । यह हिन्दी साहित्य के उन उपन्यासों में से है, जिसमें महाकाव्य के स्वर विद्यमान हैं । वास्तव में यह उपन्यास एक विस्तृत कैनवास पर अंकित चटक रंगों वाले उस चित्र की तरह है जिसमें कलाकार ` डायमेंशन ` उत्पन्न करने में चूक गया है । ` इसके विशाल चित्रफलक को देख सहसा फ्रेन्च उपन्यासकार मार्शल प्राउस्त के उपन्यास 'Rememberance of things past ' की याद आ जाती है । परंतु जहाँ प्राऊस्त का दृश्यांकन स्मृति के त्रिपार्श्व फलक से छनकर आता है ,वहाँ इस उपन्यास में इतिहास की वस्तुपरक परक दृष्टि है ।" [१५]

एक परिवार को केन्द्रबिंदु बनाकर उसके द्वारा समय के परिवर्तन को वह प्रस्तुत करता है और चार पीढियों का अंतर स्पष्ट करता है ।

८) वह फिर नहीं आयी --

सन १९६० में प्रकाशित 'वह फिर नहीं आयी' भगवती बाबू का छोटा उपन्यास है । आत्मकथनात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास एक सामान्य घटना-प्रधान उपन्यास है । कहानी के रूप में यह कथानक उपन्यास से कहीं अधिक सफल और कसाव से युक्त है ।

९) सामर्थ्य और सीमा --

सन १९६२ में प्रकाशित भगवती बाबू का उपन्यास 'सामर्थ्य और सीमा' सही अर्थों में प्रौढकृति है । औपन्यासिक तत्वों का सही संतुलन इस कृति में हमें देखने को मिलता है । उपन्यास वह विधा है जिसमें कृतिकार अधिक से अधिक विद्यमान रहता है । 'सामर्थ्य और सीमा' में लेखक मनुष्य की सामर्थ्य और उसकी सीमा का मूल्यांकन करता है ।

१०) थके पाँव --

सन १९६३ में प्रकाशित 'थके पाँव' भगवती बाबू का लघु उपन्यास है । विवशताव लेखक ने 'थके पाँव' नाम का एक रेडियो प्ले लिखा था - उसी प्ले को उन्होंने विवश होकर उपन्यास का रूप दे दिया । इसके विषय में स्वयं भगवती बाबू ने लिखा है -- " उसे मैंने कभी महत्व नहीं दिया । यह प्ले मैंने 'थके पाँव' नाम से ही सन १९५३ में लिखा था, किसी प्रेरणा से नहीं, एक तरह से विवश होकर ।"[१६] गहरी जीवन की घूटन को भोगते हुए निम्न मध्य वर्ग के आर्थिक संघर्ष को चित्रित करना उपन्यास का ध्येय है, लेकिन लेखक उसे गहराई से चित्रित नहीं कर पाया है ।

११) रेखा —

`रेखा` उपन्यास सन १९६४ में प्रकाशित हुआ । यौन-कुण्ठाओं से ग्रस्त रोमानी आदर्श और कटु यथार्थ के बीच भटकती हुयी विवाहिता स्त्री की कहानी है ।`रेखा` उपन्यास परिस्थितियों की पकड में छटपटाते हुए पात्रों की विशेषाता को चित्रित करते हुए कुछ प्रश्न चिह्न छोड जाता है ।

१२) सीधी-सच्ची बातें --

`सीधी-सच्ची बातें` १९६८ में प्रकाशित भगवती बाबू का डिमाई आकर का बृहत उपन्यास है । इस उपन्यास की पृष्ठभूमि सन १९३८ से लेकर १९४८ तक काल की है जिसमें त्रिपुरी कॉग्रेस से लेकर बापू की मृत्यू तक की घटनायें हैं ।

१३) सबहिं नचावत राम गुसाईं --

सन १९७० में प्रकाशित भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास`सबहिं नचावत राम गुसाईं` एक अत्यंत सफल कृती मानी जाती है । कथा और शिल्प के अद्भूत संतुलन के कारण उनकी परवर्ती कृतियों में यह कृति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है ।

१४) प्रश्न और मरीचिका --

सन १९७३ में प्रकाशित`प्रश्न और मरीचिका` भगवती बाबू का नवीनतम बृहत उपन्यास है । चार खण्डों का यह उपन्यास १५ अगस्त, १९४७ से लेकर १९६३ तक के भारतीय समाज की उथल-पुथल पर आधारित है । यह उप भारतीय जनमानस के मोह भंग को प्रस्तुत करता है । स्वातंत्र्योत्तर भारत के जीवन मूल्यों के विघला की कहानी सीधे और सहज ढंग से इस कृति के माध्यम से सामने आती है ।

४) निष्कर्ष --

भगवतीचरण वर्मा के सम्यक विधा साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात हमारे सामने उनका साहित्यकारवाला विशिष्ट व्यक्तित्व उभर आता है । उनकी

समस्त रचनाओं में हमें व्यक्तिवादी मानव-चेतना का स्वर मुखरित मिलता है । वर्माजी की आस्था `फेन इन गुड` वाली है । यही वर्माजी के साहित्य में वह विशिष्टता पैदा हो गयी है, जो हमें सर्वाधिक प्रभावित करती है और यह विशिष्टता है उनका अत्याधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण ।

भगवतीचरण वर्माजी ने साहित्यिक विधाओं के अंतर्गत किसी भी विधा को अछुता नहीं छोडा है । उनकी लेखन शैली ने विविध विधाओं को स्पर्श किया है । काव्य, कहानी, निबंध, चित्रलेख, नाटक और उपन्यास आदि विधाओं की सृजना की है । वर्माजी का साहित्य विचारोत्तेजक है, विचार-प्रधान नहीं । मनोरंजन की सृष्टि करना उनके कथा-साहित्य का मुख्य ध्येय है । कहानीवाले तत्व को प्राथमिकता देने के कारण ही उनकी कहानियों में हमें लघुत्व नहीं मिलता । उनमें विस्तार स्वयं हो गया है ।

भगवती बाबू प्रेमचंद से जैनेन्द्र और यशपाल तक की एक महत्वपूर्ण कडी भी हैं और प्रेमचंद युग के बाद के पहले और मौलिक कथाकार । उपन्यास साहित्य में उन्होंने प्रेमचंद के आदर्शवाद के मुक्त कराकर व्यक्ति स्वातंत्र्य का संदेश दिया है ।

संक्षेप में प्रेमचंद के पश्चात भगवतीचरण वर्माजी ने हिन्दी साहित्यकाश में अपनी मौलिक साहित्यिक कृतियों के द्वारा चार चाँद लगाये हैं और साहित्य का भांडार उजागर किया है ।

संदर्भ

१)	भगवतीचरण वर्मा	'साहित्यिक मान्यताएँ',	पृ.१
२)	डा.रमाकान्त श्रीवास्तव	'व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में भगवतीचरण वर्मा'	पृ.३१६
३)	भगवतीचरण वर्मा	'सक्रिय और एक नाराज कविता'	पृ.९
४)	डॉ.कुसुम वार्ष्णेय	'भगवतीचरण वर्मा: चित्रलेखा से सीधी सच्ची बातें तक'	पृ.१
५)	- वही -	- वही -	पृ.३
६)	डॉ.रमाकान्त श्रीवास्तव	'व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में भगवतीचरण वर्मा'	पृ.३१६
७)	- वही -	- वही -	पृ.३१७
८)	- वही -	- वही -	पृ.८५
९)	भगवतीचरण वर्मा	'रंगों से मोह'(प्रस्तावना)	पृ.४
१०)	डॉ.रमाकान्त श्रीवास्तव	'व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में भगवतीचरण वर्मा'	पृ.८७
११)	डॉ.अष्टभुज पाण्डेय	'हिन्दी कहानी,शिल्प इतिहास'	पृ.१२४

१२) डॉ.रमाकान्त श्रीवास्तव ‘ व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में भगवतीचरण वर्मा ’ पृ.९५

१३) भगवतीचरण वर्मा ‘ साहित्य की मान्यताएँ ’ पृ.९

१४) लक्ष्मीकान्त वर्मा ‘ प्रेमचन्दोत्तर काल,नये धरातल,आलोचना उपन्यास अंक ’ पृ.९२

१५) डॉ.शांतिस्वरूप गुप्त ‘ हिन्दी उपन्यास ’, ‘ महाकाव्य के स्वर ’ पृ.५९

१६) डॉ.कुसुम वार्ष्णेय ‘ चित्रलेखा से सबहिं नचावत राम गुसाईं तक ’ पृ. २१९